ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292,REG.No.:561/2013-14 Vol.-I, No.-1, PP-82-83, YEAR 2013

पूँजी का वर्चस्व और भारतीय समाज

❑ डॉ0 संध्या

पूँजीवाद समकालीन वि व की एक बहुआयामी चुनौती है। एक वैचारिकी के रूप में तथा सामाजिक–आर्थिक नियोजन, नीति एवं कार्य प्रणाली के रूप में पूँजीवाद सम्पूर्ण वि व को प्रभावित किया है। इस व्यवस्था ने 'चिन्तन' और 'क्रिया' दोनों ही पक्ष को एक नवीन आवरण प्रदान किया है। आज का पूँजीवाद गुणात्मक रूप से उस पूँजीवाद से भिन्न है जिसे कार्लमार्क्स तथा अन्य मार्क्सवादी चिन्तकों ने विश्लेषित किया था। मार्क्सवादी चिन्तन अतिरिक्त मूल्य और एकाधिकारवादी पूँजीवाद को मूल स्तम्भ मानता था। मार्क्सवादियों ने यह घोषणा की थी कि अपने अन्तरविरोधों के कारण पूँजीवाद का अन्त हो जाएगा। पूँजीवादी भोषण के स्थान पर एक नवीन समाज का उदय होगा जो वर्ग विहिन समाज होगा। यहाँ न कोई भोषक होगा और न ही भोषित।

वर्तमान वि व की आर्थिक राजनीतिक एवं सामाजिक स्थिति का आकलन किया जाय तो यह विदित होगा कि पूँजीवाद मृतप्राय नहीं है, वरन् यह एक जीवन्त व्यवस्था है जो निरन्तर भाक्ति ाली होती जा रही है। इसके विपपरीत जिसे हम साम्यवादी व्यवस्था के नाम से सम्बोधित करते थे वह निरन्तर विखण्डित होती जा रही है। रूस और कतिपय यूरोप के दे ा जो अत्यन्त भाक्ति ाली साम्यवादी दे ा थे वे निरन्तर टूटते जा रहे हैं। साम्यवादी चीन नाम मात्र के लिए साम्यवादी दे ा रह गया है। चीन ने विकास के पूँजीवादी मार्ग को अपना लिया है। आधुनिकता के रंग में रंगते हुए उसकी अर्थ–व्यवस्था एक मिश्रित व्यवस्था बन गई है जहॉ अमेरिकन विकास के माडल को अपनाया जा रहा है। चीन निरन्तर उपभोक्ता समाज की ओर अग्रसर होता चला जा रहा है। जिसमें सस्ते माल के उत्पादन द्वारा एि ाया के दे ाों में उत्पादित वस्तुओं के विक्रय के लिए बाजार ढूढे जा रहे हैं। बड़े–बड़े कल कालखानें एवं बड़े उद्योगों के स्थान पर मध्यम स्तर के उत्पादन को चीन प्रोत्साहित दे रहा है।

वि व की भाक्ति ाली राष्ट्र रूस जिसने प्रथम वि व युद्ध के समय भाक्ति ाली साम्यवादी राष्ट्र की स्थापना की थी। जहॉ सर्वहारा के अधिनायकत्व की स्थापना की गई थी। द्वितीय वि व युद्ध के प चात भीत युद्ध प्रारम्भ हुआ। लड़ाई साम्यवाद एवं पूँजीवाद के बीच की थी। 60 एवं 70 के द ाक के आते आते साम्यवादी व्यवस्था जर्जर होने लगी। रूस न केवल राजनीतिक रूप से कई गणराज्यों मे ंपरिवर्तित हो गया वरन् पूँजीवादी व्यवस्था की वैचारिकी एवं अर्थतंत्र के सम्मुख रूस ने घुटने टेक दिये। रूस ने वि व बाजार में अपना स्थान खो दिया और धीरे–धीरे पूँजीवादी मूल्य, मान्यताओं और व्यवस्थाओं को अपनाना भुरू कर दिया।

साम्यवादी व्यवस्था का विखण्डन पूँजीवाद की कीर्ति पताका को उन्नत करने लगा। आज सम्पूर्ण वि व का राजनीतिक एवं आर्थिक तंत्र पूँजीवादी मान्यताओं के अनुरूप संगठित हो रहा है। वि व में पूँजीवाद एक अन्तर्राश्ट्रीय व्यवस्था के रूप में अपने पंख पसार रहा है। पूँजीवाद का प्रतिरोध निरन्तर ि ाथिल पड़ता जा रहा है।

भारतीय समाज भी पूँजीवाद के वर्चस्व का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। स्वतंत्रता के प चात भारत में जिस नवीन अर्थव्यवस्था को अपनाया गया उसे मिश्रित अर्थव्यवस्था की संज्ञा प्रदान की जाती है। भारतीय नियोजकों ने प्रयास किया कि उत्पादन के निजी क्षेत्र (प्राइवेट सेक्टर) पर अंकु ा लगाया जाय और सरकारी नियंत्रण में पब्लिक सेक्टर में उद्योगों का अधिक से अधिक स्थानान्तरण किया जाय। विविध क्षेत्रों में वि ोश रूप से 'स्टील उत्पादन' में ऐसे औद्योगिक उपक्रमों की स्थापना की गई, जो सरकारी नियन्त्रण में थे, जिसमें पूँजी निवे ा एक या चुने हुए पूँजीपति का न होकर सामुदायिक था। साथ ही साथ सरकार ने कोटा, परमिट, लाइसेंस की व्यवस्था प्रारम्भ की, जिससे संसाधनों का वितरण सरकार के नियंत्रण में हो गया। प्रारम्भिक द ाओं में यह व्यवस्था लाभदायक सिद्ध हुई, किन्तु धीरे–धीरे सरकारी प्राधिकरण एवं उपक्रम अपने अभिष्ठ लक्ष्यों को प्राप्त करने में निरन्तर असफल होते गये। न तो

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाज ाास्त्र विभाग, एच0एन0एम0 डिग्री कालेज, झांसी (उ0प्र0) भारत

सेक्टर के उपक्रम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकें। अनेक पब्लिक सेक्टर इकाई पर प्रतिकूल प्रभाव डाला। दूसरी ओर निजी क्षेत्र की औद्योगिक इकाईयाँ उत्पादन के क्षेत्र में निरंतर विस्तृत होती गई। बाजार में निजी क्षेत्र के उत्पादनों की माँग अपनी गुणवत्ता के कारण बढ़ी।

सन् 80 के द ाक में आर्थिक क्षेत्र में 'आत्म–मंथन' की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई, जिसकी परिणति 1990 के द ाक के प्रारम्भ में 'नवीन आर्थिक नीति' की उद्घोषणा के रूप में हुई। इस परिप्रेक्ष्य में भारतीय समाज को तीन नये भाब्द मिले 'वै वीकरण', 'उदारीकरण' और 'निजीकरण'। ये तीन नवीन भाब्द केवल नवीन नहीं है वरन् पूँजीवाद के भांखनाद हैं और अब भारतीय अर्थव्यवस्था जो समाजवादी अर्थव्यवस्था के निर्माण के लिए पूँजी के निजी स्वामित्व को समाप्त करने पर बल दे रही थी, वही व्यवस्था अब पूँजीवाद की अग्रधावक बन गई है। धीरे–धीरे 'पब्लिक सेक्टर' सिमटने लगा और पूँजी के निजी स्वामित्व और एकाधिकारवाद को प्रोत्साहित किया जाने लगा।

वै वीकरण एवं उदारीकरण की नीति ने भारत में विदे ाी पूँजी और विदे ाी माल के आगमन का मार्ग प्र ास्त किया। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का आगमन होने लगा, जिन्होंने छद्म वेष में स्थानीय संसाधनों, प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों, का प्रयोग करते हुए भारत से पूँजी का हस्तान्तरण विदे ाों को किया जाना सम्भव किया। आज न केवल विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कम्प्यूटर आदि क्षेत्रों में विदे ाी बौद्धिक सम्पदा के ऊपर भारत निर्भर हो गया है, वरन जो संसार के विकसित दे ाों में द्वितीय या तृतीय स्तर का ज्ञान था वह भारतीय अर्थ–व्यवस्था के विकास के नाम पर भारत को प्रदान किया जा रहा है। उच्च कोटि के एवं प्रथम श्रेणी के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का केन्द्र वि व के विकसित दे ा बने हुए हैं। तकनीकी क्षेत्र में विकास ाील दे ा की पराश्रयता निरन्तर बढ़ती जा रही है।

चूँकि, पूँजीवाद एक आर्थिक व्यवस्था ही नहीं वरन् चिन्तन और व्यवहार की एक वि ाष्ट वैचारिकी भी है। अतः भारत जैसा दे ा पा चात्य वैचारिकी भी है, जो पा चात्य वैचारिकी एवं संस्कृति का 'दास' बन गया है। पा चात्य दे ाों की उपभोक्ता संस्कृति भारतीय समाज को एक वि ाल दानव के रूप में ग्रसित कर रही है। संचार के नवीन साधनों के माध्यम से पा चात्य संगीत, पा चात्य नृत्य, पा चात्य जीवन– ौली आदि भारत में निरन्तर प्रसारित हो रही है। आज परम्परागत भारतीय संस्कृति वि ोष रूप से 'लोक–संस्कृति' का ह्रास हो रहा है। मनोरंजन का व्यवसायीकरण हो रहा है। धर्म–वि वास एवं धार्मिक–व्यवहार में प्रद ान अधिक है और आस्था कम। भारतीय समाज पूर्ण रूप से पूँजीवादी समाज के गुणों को प्रतिबिंबित करता है। पूँजीवादी संस्कृति परम्परागत संस्थाओं–परिवार, विवाह, नातेदारी को भी प्रभावित कर रही है। व्यक्ति एवं व्यक्ति के सम्बन्ध में आत्मीयता का लोप हो रहा है और सम्बन्ध औपचारिक, अस्थिर और स्वार्थ केन्द्रित बनते चले जा रहे हैं। भारत की परम्परागत संस्कृति और सामाजिक धार्मिक संस्थाओं का विखण्डन जो पूँजीवाद के निरन्तर भाक्ति ाली होने के कारण सम्भव हुआ है, वह हम भारतीयों के लिए चिन्ता का विषय है।

*****

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गिरी, अनंत कुमार– 'दी चैलेन्ज आफ अन्डरस्टैडिंग इंडियन सोसाइटीः जेनरासिटी एण्ड ट्रान्सफॉरमे ान्स', सोि ायोलॉजिकल बुलेटिन, अंक 59, संख्या 2, मई–अगस्त 2010।
2. पण्डा, स्मिता मिश्रा (सम्पा), 'इन्जेन्डरिंग गवर्नेंस इन्स्टीटयू ांस स्टेट, मार्केट एण्ड सिविल सोसाइटी', सेज पब्लिके ान–नई दिल्ली, 2008।
3. विकिपीडिया।
4. हसनैन नदीम, 'समकालीन भारतीय समाज', भारत बुक सेन्टर, लखनऊ, 2004।
5. सिंह, राज बाला, 'मानवाधिकार और महिलायें', आविष्कार पब्लिषर्स, जयपुर, 2006।